

# डीआरडीओ समाचार



<https://www.drdo.gov.in>

ISSN: 0971-4405

डीआरडीओ की मासिक गृह पत्रिका

मार्च 2026 खण्ड 38 अंक 03

## सागर मैत्री-5 औपचारिक रूप से स्वाभा



“वास्तव में दो ही चीजें हैं, विज्ञान और मत; पहला ज्ञान को जन्म देता है, दूसरा अज्ञान को।” - हिप्पोक्रेट्स



मुख्य संपादक: किरन चौहान  
सह मुख्य संपादक: सुधांशु भूषण  
संपादक: दीप्ति अरोरा  
सहायक संपादक: धर्म वीर  
संपादकीय सहायक: रमन  
अनुवादक: अनुराग कश्यप

मार्च 2026 | खण्ड 38 | अंक 03

प्रकाशन का 38वां वर्ष

## हमारे संवाददाता

अहमदनगर	:	श्री आर ए शेख, वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वीआरडीई)
आगरा	:	श्री ग्यासुद्दीन कुरैशी, हवाई वितरण अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एडीआरडीई)
अंबरनाथ	:	डॉ गणेश एस धोले, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल)
बालासोर	:	श्री मृणाल गोस्वामी, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) श्री रत्नाकर एस महापात्रा, प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई)
बेंगलूरु	:	श्री श्रीराम जी एन, वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई) श्रीमती एम आर भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (सीएबीएस) श्रीमती फहीमा ए जी जे, कृत्रिम ज्ञान एवं रोबोटिकी केंद्र (केयर) डॉ जोसेफिन निर्मला एम, युद्धक विमान प्रणालियाँ विकास एवं एकीकरण केंद्र (कैसडिक) श्री जितेन्द्र कुमार तथा श्री वेदांग चौहान, सैन्य उडान योग्यता एवं प्रमाणन केंद्र (सेमिलेक) डॉ संचिता सिल तथा डॉ सुधीर एस काम्बले, रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल) डॉ वी सेंथिल, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जीटीआरडीई) श्रीमती साइमा बशीर, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई) सुश्री मीता जना, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी)
चंडीगढ़	:	डॉ पाल दिनेश कुमार, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल) डॉ अनुजा कुमारी, रक्षा भू-सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरडीई)
चेन्नई	:	श्री के अंबाझगन, युद्धक वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सीवीआरडीई)
देहरादून	:	श्री सचिन ओबराय, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील) श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई)
दिल्ली	:	श्री विकास कश्यप, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेप्टेम) श्री विशाल द्विवेदी, अग्नि, पर्यावरण तथा विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस) डॉ के पी मिश्रा, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) श्री संतोष कुमार चौधरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर) डॉ नवीन कुमार सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) डॉ सुजाता दास, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) श्रीमती सुगंधा अग्रवाल, भर्ति एवं मूल्यांकन केंद्र (आरएसी) श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी) डॉ रुपेश कुमार चौबे, टोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल) डॉ एम के मेघवंशी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई)
ग्वालियर	:	डॉ अतुल ग्रोवर, रक्षा जैव-ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर)
हल्द्वानी	:	श्री ए नागेन्द्रनाथ, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एसएसएल)
हैदराबाद	:	श्री श्रीनिवास जुलुरु, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल) श्री सीएच नरसिम्हाचारी, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल) श्री एस शशी नाथ, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
जगदलपुर	:	श्री खिलावन सिंह, एसएफ परिसर (एसएफसी)
जोधपुर	:	श्री डी के त्रिपाठी, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल)
कानपुर	:	डॉ मोहीत कटियार, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई)
कोच्चि	:	श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल)
लेह	:	डॉ डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (दिहार)
मसूरी	:	श्री सुनील भण्डारी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम)
मैसूरु	:	डॉ एम पालमुरुगन, जैव-रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी)
नासिक	:	श्री आशुतोष शर्मा, उन्नत ऊर्जा सामग्री केन्द्र (एसीईएम)
पुणे	:	श्री अजय के पांडे, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई) डॉ गणेश शंकर डोम्बे, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल) डॉ अनूप आनंद, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (ई) (आर एण्ड डीई)
तेजपुर	:	डॉ के एस नखुरु, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)
विशाखापत्तनम	:	श्रीमती ज्योत्सना रानी, नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल)



## इस अंक में

मुख्य लेख	4
परीक्षण	5
उत्पाद प्रदर्शन	7
समझौता ज्ञापन	7
अवसंरचना विकास	9
घटनाक्रम	10
मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप	16
राजभाषा गतिविधियाँ	28
कार्मिक समाचार	29
सामाजिक गतिविधियाँ	30
निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम	31

वर्तमान अंक, *DRDO Newsletter*; Vol 46, Issue 03, March 2026, का हिंदी अनुवाद है।

Please mail your feedback and suggestions at:  
[director.desidoc@gov.in](mailto:director.desidoc@gov.in); [drdonl.desidoc@gov.in](mailto:drdonl.desidoc@gov.in);  
Contact at: 011-23902403; 23902472; Fax: 011-23819151

## सागर मैत्री-5 अभियान को हरी झंडी दिखाकर औपचारिक रूप से खाना किया गया

कोच्चि स्थित नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) 'सागर मैत्री' (SM) नामक एक समुद्र विज्ञान मिशन का संचालन कर रही है, जिसका व्यापक उद्देश्य प्रधानमंत्री की "क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर)" नीति के तहत हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) के देशों के बीच सामाजिक-आर्थिक सहयोग और वैज्ञानिक संवाद को बढ़ावा देना है। इस नीति के अंतर्गत, डीआरडीओ ने 'समुद्री और संबद्ध अंतर-विषयक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान पहल' (मैत्री) नामक एक वैज्ञानिक घटक शुरू किया है, जिसका मुख्य लक्ष्य IOR देशों के साथ "समुद्री अनुसंधान एवं विकास" के क्षेत्र में दीर्घकालिक सहयोग स्थापित करने पर है। इस कार्यक्रम के तहत, अनुसंधान पोत आईएनएस सागरध्वनि उन समुद्री रास्तों को फिर से दोहराएगा, जिन्हें

1962-65 के दौरान 'अंतर्राष्ट्रीय हिंद महासागर अभियान' (IIOE) में आईएनएस किस्ता ने तय किया था। इस मिशन का उद्देश्य ओमान, मालदीव, श्रीलंका, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, और म्यांमार-इन आठ आईओआर देशों के साथ दीर्घकालिक वैज्ञानिक साझेदारी और सहयोग स्थापित करना है। एनपीओएल के वैज्ञानिकों ने IIOE में भाग लिया, तथा सागर मैत्री ने पुराने अवलोकनों की फिर से समीक्षा करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

सागर मैत्री-5 (SM-5) को 17 जनवरी 2026 को कोच्चि से रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति (SCoD) के माननीय अध्यक्ष श्री राधा मोहन सिंह द्वारा हरी झंडी दिखाकर खाना किया गया। इस गौरवशाली अवसर पर SCoD के सदस्य, डॉ समीर वी कामत, सचिव, डी डी आर एंड डी, एवं अध्यक्ष

डीआरडीओ, दक्षिणी नौसेना कमान के चीफ ऑफ स्टाफ रियर एडमिरल उपल कुंडू सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस विशिष्ट मिशन का नेतृत्व एनपीओएल के वैज्ञानिक 'जी' एवं संबद्ध निदेशक (समुद्र विज्ञान) डॉ ए रघुनाथ राव ने किया।

अभियान के दौरान, आईएनएस सागरध्वनि ने कोच्चि से माले होते हुए अंतर्राष्ट्रीय जलक्षेत्र में CTD डेटा एकत्र किया। उनके निष्कर्षों का उपयोग फरवरी 1963 में आईएनएस किस्ता द्वारा निर्धारित मार्गों के साथ उत्तरी भूमध्यरेखीय हिंद महासागर के भौतिक समुद्र विज्ञान संबंधी विशेषताओं के अध्ययन के लिए किया जाएगा। टीम ने भूमध्य रेखा पर 'साइलेंट शिप रिजिम' के तहत गहरे पानी के परिवेशी शोर का डेटा भी एकत्र किया। डीआरडीओ टीम ने माले स्थित मालदीव राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और मालदीव समुद्री



अनुसंधान संस्थान के साथ संवाद किया। भारतीय उच्चायोग ने माले स्थित एमएनयू में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया। संगोष्ठी का उद्घाटन मालदीव के माननीय

मत्स्य एवं महासागरीय संसाधन मंत्री श्री अहमद शियाम ने किया। SM मिशन, भौतिक समुद्र विज्ञान, मत्स्य पालन तथा ग्लोबल वार्मिंग पर केंद्रित अंतरजलीय ध्वनि परिदृश्यों पर

वैज्ञानिक व्याख्यान दिए गए। अंततः ये सागर मैत्री मिशन 'अंडरवाटर डोमेन अवेयरनेस' (UDA) की दिशा में डीआरडीओ के प्रयासों की एक मजबूत आधारशिला बन गए हैं।

## परीक्षण

# डीआरडीओ ने गगनयान ड्रैग पैराशूट के लिए सफल योग्यता परीक्षण आयोजित किया

भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम ने गगनयान कार्यक्रम के लिए पैराशूट का क्वालीफिकेशन स्तर का लोड परीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह परीक्षण रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की चण्डीगढ़ स्थित चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल) की रेल ट्रेक रॉकेट स्लेड (आरटीआरएस) परीक्षण सुविधा में किया गया। आरटीआरएस एक विशिष्ट गतिशील परीक्षण सुविधा है, जिसका उपयोग उच्च गति वाले वायुगतिकीय और बैलिस्टिक मूल्यांकन के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।

यह परीक्षण 18 फरवरी, 2026 को विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, इसरो, हवाई वितरण अनुसंधान एवं विकास संस्थान (एडीआरडीई), डीआरडीओ और टीबीआरएल की विभिन्न समर्पित टीमों के साथ मिलकर किया गया। आरटीआरएस गतिशील परीक्षण के दौरान क्वालीफिकेशन स्तर के उन भारों का अनुकरण किया गया, जो

अधिकतम उड़ान भार से भी अधिक भार के होते हैं। यह पैराशूट के अतिरिक्त डिजाइन सुरक्षा मार्जिन को प्रदर्शित करता है।

यह परीक्षण उच्च शक्ति वाले 'रिबन पैराशूट' के डिजाइन और निर्माण में भारत की विशेषज्ञता को सिद्ध करता है। यह उपलब्धि एक बार फिर अंतरिक्ष और रक्षा कार्यक्रमों के लिए उन्नत परीक्षण सुविधाएं, उपकरण और तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करने में टीबीआरएल के विशाल योगदान को रेखांकित करती है।

केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ

सिंह ने गगनयान ड्रैग पैराशूट के सफल क्वालीफिकेशन परीक्षण पर डीआरडीओ, इसरो, और उद्योग जगत को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि यह परीक्षण 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को आगे बढ़ाने की दिशा में एक और बड़ा कदम है।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने भी इस सफल क्वालीफिकेशन स्तरीय लोड परीक्षण से जुड़ी सभी टीमों को बधाई दी है।

(<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2230224&reg=3&lang=1>)



# डीआरडीओ ने सॉलिड फ्यूल डक्टेड रैमजेट तकनीक का सफल प्रदर्शन किया

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 03 फरवरी, 2026 को ओडिशा तट पर स्थित चांदीपुर के एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) से ठोस

ईंधन डक्टेड रैमजेट (एसएफडीआर) तकनीक का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। इस उपलब्धि के साथ ही भारत उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो

गया है, जिनके पास यह अत्याधुनिक तकनीक है। यह प्रौद्योगिकी लंबी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों के विकास में सहायक होगी

और शत्रु पर रणनीतिक बढ़त प्रदान करेगी।

नोजल-लेस बूस्टर, ठोस ईंधन डक्टेड रैमजेट मोटर और फ्यूल प्लो कंट्रोलर सहित सभी उप-प्रणालियों ने अपेक्षित प्रदर्शन किया। प्रारंभ में इन्हें एक ग्राउंड बूस्टर मोटर के माध्यम से निर्धारित मैक नंबर तक पहुंचाया गया। प्रणाली के प्रदर्शन की पुष्टि आईटीआर, चांदीपुर द्वारा बंगाल की खाड़ी के तट पर तैनात विभिन्न ट्रेकिंग उपकरणों से प्राप्त उड़ान आंकड़ों के माध्यम से की गई। इस प्रक्षेपण की निगरानी डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने की, जिनमें रक्षा

अनुसंधान एवं विकास (डीआरडीएल), उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल), अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई), और आईटीआर शामिल हैं।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने एसएफडीआर तकनीक के सफल प्रदर्शन पर डीआरडीओ और उद्योग जगत को बधाई दी।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने सफल उड़ान परीक्षण में शामिल सभी टीमों को बधाई दी।

(<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2222635&reg=3&lang=1>)



## डीआरडीओ ने अत्यंत कम दूरी की वायु रक्षा प्रणाली का सफल उड़ान परीक्षण किया

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने ओडिशा तट के पास चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) से अत्यंत कम दूरी की वायु रक्षा प्रणाली (VSHORADS) के तीन सफल उड़ान परीक्षण किए हैं। ये परीक्षण विभिन्न गति, दूरी, और ऊंचाई पर उड़ने वाले तीव्र गति वाले खतरों को निष्क्रिय करने में VSHORADS मिसाइल प्रणाली की क्षमता का पुनः सत्यापन करने के लिए किए गए। सभी उड़ान परीक्षणों के दौरान, मिसाइलों ने विभिन्न खतरे की स्थितियों में दुश्मन के विमानों की नकल करने वाले तीव्र गति वाले हवाई लक्ष्यों को रोका और नष्ट कर दिया, ये सभी चरम सीमा तक पहुँचे। ये उपयोगकर्ता सत्यापन उड़ान परीक्षण संयुक्त बलों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ डीआरडीओ और विकास सह उत्पादन भागीदारों के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किए गए।

VSHORADS एक पोर्टेबल वायु रक्षा प्रणाली है जिसे डीआरडीओ की अन्य प्रयोगशालाओं और विकास-सह-उत्पादन भागीदारों के सहयोग से अनुसंधान केंद्र इमारत द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित किया गया है। यह मिसाइल प्रणाली सशस्त्र बलों की तीनों शाखाओं, अर्थात् भारतीय सेना, नौसेना, और वायु सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने प्रणाली के सफल उड़ान परीक्षण के

लिए डीआरडीओ, सशस्त्र बलों और उद्योगों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि VSHORADS के लगातार तीन सफल उड़ान परीक्षण एक बड़ी सफलता है और प्रणाली को जल्द ही सशस्त्र बलों में शामिल किया जा सकता है। डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने प्रणाली के डिजाइन और विकास में शामिल संपूर्ण डीआरडीओ टीम, सशस्त्र बलों और उद्योग भागीदारों को बधाई दी।

(<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2233776&reg=3&lang=1>)



## रक्षा मंत्री जीटीआरई में स्वदेशी एयरो इंजन प्रौद्योगिकी प्रदर्शन के साक्षी बने

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 16 फरवरी 2026 को बेंगलुरु स्थित गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जीटीआरई) का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, माननीय मंत्री ने जीटीआरई के वैज्ञानिकों से स्वदेशी इंजन के विकास पर चर्चा की और आपटरबर्नर के साथ एक इंजन परीक्षण भी देखा। भारतीय उद्योग साझेदारों द्वारा निर्मित स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित इंजन पुर्जों को माननीय रक्षा मंत्री को प्रदर्शित किया गया। कावेरी इंजन और उसके व्युत्पन्न, लघु टर्बो फैन इंजन, उन्नत टर्बो गैस जनरेटर के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों को भी प्रदर्शित किया गया तथा एएमसीए श्रेणी के इंजनों के लिए प्रस्तावित भविष्य की प्रौद्योगिकियों

के बारे में जानकारी दी गयी।

माननीय रक्षा मंत्री ने इस महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी के विकास में किए गए निरंतर प्रयासों के लिए डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, डीजी (एयरो) डॉ. के राजलक्ष्मी मेनन और जीटीआरई बिरादरी की सराहना की और उन्हें समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ आगे भी काम जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन्होंने रक्षा और नागरिक अनुप्रयोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले एयरोइंजन के महत्व और आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने यह विश्वास भी व्यक्त किया कि जीटीआरई अंतरराष्ट्रीय सहयोग से एएमसीए के लिए अगली पीढ़ी का इंजन उपलब्ध

कराएगी और इंजन विकास की समयसीमा को तेज करने का सुझाव दिया। उन्होंने उन्हें छठी पीढ़ी के इंजन प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान कार्य शुरू करने और इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करने का निर्देश दिया।

सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, महानिदेशक (एयरोस्पेस), महानिदेशक (ईसीएस), बेंगलुरु स्थित डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के निदेशक और जीटीआरई के वैज्ञानिक इस वार्ता में उपस्थित रहे। जीटीआरई के निदेशक और उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ एस वी रमना मूर्ति ने इंजन विकास में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी और रक्षा मंत्री के साथ इंजन परीक्षण का अवलोकन किया।



### समझौता ज्ञापन

## दिहार तथा आईआईटी मंडी के बीच समझौता ज्ञापन

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (दिहार), लेह के लिए एक ऐतिहासिक घटनाक्रम में, 31 जनवरी

2026 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मंडी के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर औपचारिक रूप

से हस्ताक्षर किए गए, जिससे उच्च ऊंचाई अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास में संस्थागत सहयोग को और

गहरा करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह समझौता आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो लक्ष्मीधर बेहरा, महानिदेशक (एसीई) डॉ प्रतीक किशोर तथा दिहार के सह निदेशक डॉ नीरज शर्मा की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। यह समझौता

उच्च ऊंचाई रक्षा प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में उन्नत अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, और तकनीकी ज्ञान के आदान-प्रदान में सतत सहयोग के लिए एक औपचारिक ढांचा स्थापित करेगा। इसमें सहयोगात्मक परियोजनाएं, संयुक्त

प्रयोगकार्य, संकाय-वैज्ञानिक संवाद, छात्र सहभागिता और विशेष अवसरचना का साझा उपयोग शामिल है ताकि अत्यधिक ऊंचाई वाले वातावरण में उत्पन्न अनूठी चुनौतियों का समाधान किया जा सके।



## डीएमएसआरडीई और केआईईटी, गाजियाबाद के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

30 जनवरी 2026 को रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर तथा कृष्णा इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (केआईईटी डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), गाजियाबाद, दिल्ली-एनसीआर के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इसका उद्देश्य देश और समाज के हित में वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए सहयोगात्मक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान कार्यक्रम को प्रोत्साहित करना है। डीएमएसआरडीई के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ किंग्सुक मुखोपाध्याय तथा केआईईटी के अकादमिक निदेशक डॉ आदेश कुमार पांडे ने केआईईटी परिसर में डीएमएसआरडीई के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और केआईईटी के वरिष्ठ संकाय सदस्यों

की उपस्थिति में एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू में सहयोग के क्षेत्रों में अनुसंधान, वैज्ञानिक, एवं तकनीकी सामग्री का आदान-प्रदान, विशिष्ट रुचि

के क्षेत्रों में सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम, इंटरनशिप/प्रशिक्षण/शोध प्रबंध कार्यक्रम और उपकरण सुविधाओं का साझाकरण शामिल है।



## डीएमएसआरडीई ने डॉ बी आर अंबेडकर एनआईटी, जालंधर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग हेतु डॉ बी आर अंबेडकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), जालंधर के साथ 30 जनवरी 2026 को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। डीएमएसआरडीई के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ किंगसुक मुखोपाध्याय तथा एनआईटी जालंधर के निदेशक डॉ बिनोद कुमार कनौजिया ने नई दिल्ली स्थित एनआईटी ट्रांजिट हाउस में डीएमएसआरडीई के वरिष्ठ वैज्ञानिकों तथा एनआईटी जालंधर के

वरिष्ठ संकाय सदस्यों की उपस्थिति में एमओयू पर हस्ताक्षर किए। यह एमओयू छात्रों और कर्मचारियों को

शैक्षणिक संवाद, अनुसंधान सहयोग और व्यावहारिक अनुभव के अवसर प्रदान करेगा।



### अवसंरचना विकास

## चेस, हैदराबाद में उन्नत तकनीकी, सहायक और उपयोगी अवसंरचना की आधारशिला रखी गई

23 जनवरी 2026 को हैदराबाद के चेस लेजर कॉम्प्लेक्स में "उन्नत तकनीकी, सहायक और उपयोगिता अवसंरचना" की आधारशिला रखने का समारोह आयोजित किया गया, जो संगठन के भविष्य के अनुसंधान अवसंरचना और दीर्घकालिक दृष्टिकोण को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह आयोजन नवाचार, वैज्ञानिक उत्कृष्टता और राष्ट्रीय क्षमता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक नए अध्याय की शुरुआत का प्रतीक है। आधारशिला डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ द्वारा डॉ बी के दास, डीएस एवं डीजी (ईसीएस), डॉ रविंदर सिंह, डीजी (आर एंड एम), डॉ

जगन्नाथ नायक, डीएस एवं निदेशक, चेस, डॉ बिस्वजीत चौबे, निदेशक डीसीडब्ल्यूएस एंड ई, श्री एम यज्ञैया सीसीई (अनुसंधान एवं विकास) दक्षिण तथा श्री राजीव लोचन, मुख्य अभियंता एमईएस (अनुसंधान एवं विकास) की

गरिमामयी उपस्थिति में रखी गई।

प्रस्तावित बुनियादी ढांचे को परीक्षण क्षेत्रों से होने वाले दूरस्थ प्रयोगों और प्रदर्शनों को देखने के लिए एक गैलरी-नुमा हॉल से सुसज्जित किया जाएगा।



## गणतंत्र दिवस समारोह

### सीवीआरडीई, चेन्नई

26 जनवरी 2026 को चेन्नई स्थित लड़ाकू वाहन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (सीवीआरडीई) में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। सीवीआरडीई के निदेशक श्री जे राजेश कुमार ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद सीवीआरडीई के वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और सहायक टीमों की उपस्थिति में राष्ट्रगान गाया गया।



### डीआईपीआर, दिल्ली

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली ने 26 जनवरी 2026 को 77वां गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया। संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धांतों को याद करते हुए, डीआईपीआर की निदेशक डॉ निशी मिश्रा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद वरिष्ठ वैज्ञानिकों, सशस्त्र बलों के अधिकारियों, सुरक्षा कर्मियों, और डीआईपीआर परिवार की उपस्थिति में राष्ट्रगान गाया गया, जिससे गणतंत्र दिवस के महत्व का एक साझा बोध उत्पन्न हुआ।

वंदे मातरम के 150 वर्ष के महत्वपूर्ण अवसर और केंद्रीय विषय को चिह्नित करते हुए, डीआईपीआर परिवार के उत्साही सदस्यों द्वारा वंदे मातरम के

गीत का गायन कर इसे मनाया गया, जिसने देशभक्ति के जज्बे को जागृत कर दिया।

डीआईपीआर के निदेशक ने सभी का अभिवादन किया, उनके अमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद दिया और सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपनी पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों भूमिकाओं में देश की सेवा के लिए खुद को फिर से समर्पित करें।



### डीएमएसआरडीई, कानपुर

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने 26 जनवरी 2026 को 77वां गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। डीएमएसआरडीई के निदेशक एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ किंग्सुक मुखोपाध्याय ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद डीएमएसआरडीई कर्मियों ने राष्ट्रगान गाया। निदेशक ने सभा को संबोधित करते हुए सभी कर्मचारियों और उनके परिवार को 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई दी। डीएमएसआरडीई

के कई कर्मचारियों ने इस शुभ अवसर पर देशभक्ति कविताएँ और गीत प्रस्तुत किए। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले डीएमएसआरडीई कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार और योग्यता प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम का समन्वय डॉ सुरेश कुमार, वैज्ञानिक 'जी' ने किया।



### आईआरडीई, देहरादून

26 जनवरी 2026 को देहरादून स्थित यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई) ने 77वां गणतंत्र दिवस मनाया। इस अवसर पर आईआरडीई के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ अजय कुमार ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया जिसके बाद राष्ट्रगान गाया गया। सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने खुशी व्यक्त की, हार्दिक धन्यवाद दिया और सभी कर्मचारियों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में आईआरडीई की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और 2025 के दौरान परियोजनाओं के सफल समापन के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना की। उन्होंने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सभी के पूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। डॉ अजय कुमार ने आईआरडीई न्यूजलेटर 'दृष्टि' (डिटेक्शन, रिकॉग्निशन, आइडेंटिफिकेशन, खोज, लक्ष्य निर्धारण

तथा नवाचार के साथ ट्रेकिंग) का नवीनतम अंक भी जारी किया। दृष्टि, आईआरडीई का एक अर्धवार्षिक प्रकाशन है जो आईआरडीई के नए विकसित उत्पादों, परीक्षणों, कार्यक्रमों, दौरों, सेवानिवृत्ति आदि से संबंधित सभी समाचारों को कवर करता है।



### एलआरडीई, बेंगलुरु

26 जनवरी 2026 को बेंगलुरु स्थित इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई) ने देशभक्ति की भावना और उत्साह के साथ 77वां गणतंत्र दिवस मनाया। समारोह का शुभारंभ एलआरडीई के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं कार्यवाहक निदेशक श्री आबिद हुसैन वी ए द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ, जिसके बाद राष्ट्रगान गाया गया। कार्यवाहक निदेशक ने सभा को संबोधित करते हुए एलआरडीई समुदाय को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।



### एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

26 जनवरी 2026 को बेंगलुरु स्थित सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी) में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। समारोह का शुभारंभ एमटीआरडीसी के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं केंद्र प्रमुख डॉ एस के दत्ता द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ, जिसके बाद उन्होंने सभा को संबोधित किया। एमटीआरडीसी के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत "वंदे मातरम" के साथ हुआ।



### एनएमआरएल, अंबरनाथ

26 जनवरी 2026 को नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल), अंबरनाथ में 77वां गणतंत्र दिवस देशभक्ति की भावना और उत्साह के साथ मनाया गया। समारोह का शुभारंभ उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ सुमन रॉय चौधरी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुआ। उन्होंने सभी कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। अपने संबोधन में, एनएमआरएल के निदेशक ने कर्मचारियों को तकनीकी उन्नति में सक्रिय योगदान देने और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। एनएमआरएल के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने

समारोह में भाग लिया। एनएमआरएल के कर्मचारियों के बच्चों ने इस शुभ अवसर पर देशभक्ति कविताएँ और गीत प्रस्तुत किए।



### एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

एनएसटीएल के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ अब्राहम वर्गीज ने एनएसटीएल परिसर में एनएसटीएल के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अपने संबोधन में उन्होंने 77वें गणतंत्र दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर सभी सदस्यों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि 26 जनवरी 1950 को हमारे राष्ट्र का पुनर्जन्म हुआ। हमने स्वयं को एक लिखित संविधान दिया है, जो भारत को एक संप्रभु राष्ट्र घोषित करता है। डॉ वर्गीज ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर बहुउद्देशीय अग्निशमन यंत्र का उद्घाटन किया, जिसकी क्षमता 5000 लीटर पानी और 500 लीटर फोम, CO<sub>2</sub> और डीसीपी सिलेंडरों की है।



## स्थापना दिवस समारोह

### डीआरडीबीटी, मैसूर

मैसूर स्थित जैव रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी) ने 9 जनवरी 2026 को अपना 65वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ मनमोहन परिदा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई), ग्वालियर थे, जिन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता डीआईबीटी के केंद्र प्रमुख डॉ आर कुमार ने की। डीआईबीटी के सह-केंद्र प्रमुख डॉ वी ए सजीव कुमार ने मुख्य अतिथि, गणमान्य व्यक्तियों, सेवानिवृत्त कर्मियों, और कर्मचारियों का स्वागत किया। अपने संबोधन में डॉ कुमार ने वर्ष 2025 के दौरान डीआईबीटी की प्रमुख अनुसंधान एवं विकास उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और कर्मचारियों को आने वाले वर्षों में अनुसंधान एवं विकास में नए मुकाम हासिल करने के लिए अपने समर्पित प्रयासों को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

डॉ परिदा ने अंतरिक्ष खाद्य सामग्री, सशस्त्र बलों को रसद सहायता, क्षेत्र में प्रयोग के लिए उपयुक्त परीक्षण किटों के विकास और विस्तारित शेल्फ लाइफ वाले रेडी-टू-ईट राशन के विकास के क्षेत्रों में डीआईबीटी के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की। उन्होंने सशस्त्र बलों के साथ-साथ आम जनता के लिए संस्थान की उत्कृष्ट सेवाओं की भी प्रशंसा की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा मेधावी कर्मचारियों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए। खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। समारोह का समापन एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ



जिसमें कर्मचारियों और उनके परिवार जनों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया।

इस आयोजन ने राष्ट्रीय रक्षा को मजबूत करने और देश के लिए खाद्य और जैव-रक्षा तैयारियों को सुनिश्चित करने के प्रति डीआईबीटी की समृद्ध विरासत, वैज्ञानिक उत्कृष्टता और निरंतर प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित किया।

### एनएमआरएल, अंबरनाथ

6 जनवरी 2026 को अंबरनाथ स्थित नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल) में 73वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री आर वी हारा प्रसाद, डीएस एवं डीजी (एनएस एंड एम), श्री पी टी रोजतकर, एनएमआरएल के पूर्व निदेशक, पीएमओ के निदेशक, डीसीडब्ल्यूई के निदेशक, डीसीडब्ल्यूई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय नौसेना के अधिकारी, उद्योग जगत के प्रतिनिधि

और एनएमआरएल के कर्मचारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। डॉ सुमन रॉय चौधरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनएमआरएल ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए वर्ष 2025 में प्रयोगशाला द्वारा प्राप्त विकास और उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

उन्होंने एनएमआरएल द्वारा किए जाने वाले भविष्य के अनुसंधान कार्यों पर भी प्रकाश डाला। डॉ कामत ने एनएमआरएल द्वारा वर्षों में हासिल की गई उपलब्धियों पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने एनएमआरएल के सभी सदस्यों को अपने मिशन में और अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और उन्हें नए, अद्वितीय विचारों और नवाचारों के साथ अनुसंधान एवं विकास में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर एनएमआरएल की वार्षिक रिपोर्ट 2025 जारी की गई, जिसमें प्रयोगशाला के विभिन्न वैज्ञानिक विकास, परियोजनाओं

में प्राप्त उपलब्धियां, अनुसंधान एवं विकास पहल, मानव संसाधन, प्रौद्योगिकी प्रबंधन और कल्याणकारी गतिविधियों का विवरण शामिल है। मुख्य अतिथि द्वारा प्रयोगशाला स्तर के पुरस्कार विजेताओं और खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

### यूएआरएफ, एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि की एक क्षेत्रीय इकाई, अंडरवाटर एकाॅस्टिक रिसर्च फैसिलिटी (यूएआरएफ), इडुक्की ने 23 जनवरी 2026 को अपना स्थापना दिवस मनाया। मुख्य अतिथि, डॉ डी शेषागिरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनपीओएल ने समारोह का उद्घाटन किया और उद्घाटन संबोधन दिया। श्री शान विक्टर परेरा, वैज्ञानिक 'एफ', यूएआरएफ ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और यूएआरएफ की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्रीमती रमीथा के, वैज्ञानिक 'एच' एवं निदेशक (परियोजनाएं), श्रीमती मिनी जी, वैज्ञानिक 'एच' एवं निदेशक (प्रौद्योगिकी), श्री गणेश आर, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक (प्रबंधन), डॉ रेमा देवी एम, वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष, एनपीओएल कार्य समिति ने भी



उपस्थित लोगों को संबोधित किया। श्री टिंटो चाको, सचिव, कार्य समिति; श्री अभिलाष एम के, जीएस, एनपीओएल नागरिक कर्मचारी संघ एवं कर्मचारी पक्ष के नेता, जेसीएम चतुर्थ स्तर और सदस्य, जेसीएम तृतीय स्तर; तथा एनपीओएल अनुसंधान एवं विकास कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री आनंद कुमार दुबे ने बधाई दी।

केरल बांध सुरक्षा प्राधिकरण, वन

एवं वन्यजीव विभाग, जिला प्रशासन, केरल राज्य विद्युत बोर्ड, केरल पुलिस विभाग आदि के अधिकारी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। एनपीओएल के सह निदेशक, समूह निदेशक, वरिष्ठ अधिकारी और कार्य समिति के सदस्यों, यूएआरएफ सदस्यों और उनके परिवारों के साथ समारोह में शामिल हुए। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हुआ।



## 11वीं राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी में डीएमएसआरडीई की भागीदारी

15-18 जनवरी 2026 के दौरान बंगाल मानव संसाधन विकास फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा 11वीं राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस विशाल प्रदर्शनी का विषय 'आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत' था। रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर को इस आयोजन में डीआरडीओ प्रदर्शनी के आयोजन के लिए नोडल प्रयोगशाला नामित किया गया। डीएमएसआरडीई ने इस प्रदर्शनी में स्वदेशी रूप से विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों, जैसे बीपीजे लेवल-6, एसीएफ आधारित सीबीआरएन सूट मार्क-VI, उन्नत दंगा रोधी सूट, सीबीआरएन दस्ताने और

ओवरबूट, विस्फोट रोधी सूट आदि का प्रदर्शन किया। डीआरडीओ पवेलियन को उद्योग और शिक्षा जगत से अनुकूल

प्रतिक्रिया मिली। श्री ए के गौतम, वैज्ञानिक 'एफ' इस आयोजन के नोडल अधिकारी थे।



## भारतीय विज्ञान सम्मेलन 2025 में डीआरडीओ की भागीदारी

26-29 दिसंबर 2025 के दौरान तिरुपति स्थित राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में भारतीय विज्ञान सम्मेलन का 7वां संस्करण आयोजित किया गया। भारतीय विज्ञान सम्मेलन 2025 का विषय था "भारतीय परिप्रेक्ष्य के साथ सतत विकास"।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता मुख्य अतिथि, आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन चंद्रबाबू नायडू, आरएसएस प्रमुख डॉ मोहन भगवत और केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न मंचों के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिनमें स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री सत्यकुमार यादवय पूर्व डीआरडीओ अध्यक्ष डॉ जी सतीश रेड्डी; डीएस एवं डीजी (पीसी एवं एसआई) डॉ चंद्रिका कौशिक; और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी एस आर कृष्ण मूर्ति



शामिल थे।

डीआरडीओ की संबंधित प्रयोगशालाओं, जैसे कि सीवीआरडीई, एलआरडीई, सीएबीएस, एनएसटीएल, और डीआरडीएल ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया। सीवीआरडीई को इस

आयोजन के लिए नोडल प्रयोगशाला नामित किया गया। क्षेत्रीय पीआरओ श्री के अंबाझगन, वैज्ञानिक 'एफ' तथा सीवीआरडीई के पीआरओ श्री आर पी चंद्रशेखर, वैज्ञानिक 'ई' ने इस आयोजन का समन्वय किया।

## ईडब्ल्यूसीआई-2026 में डीआरडीओ की भागीदारी

“इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया—2026 (ईडब्ल्यूसीआई—2026)” इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर (ईडब्ल्यू) और उभरती रक्षा प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में एक प्रमुख और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सम्मेलन है। इस सम्मेलन का आयोजन इंडिया चैप्टर ऑफ दी एसोसिएशन ऑफ ओल्ड क्रोज (एओसी), बेंगलूर द्वारा डीआरडीओ के सहयोग से किया गया।

बेंगलुरु स्थित सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी) ने भी सम्मेलन में भाग लिया और उच्च-शक्ति माइक्रोवेव और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों के क्षेत्र

में अपने नवीनतम तकनीकी विकास को प्रदर्शित किया तथा 20-22 जनवरी 2026 के दौरान जे एन टाटा राष्ट्रीय

विज्ञान संगोष्ठी परिसर में आयोजित ईडब्ल्यूसीआई 2026 में अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।



## आईआईटी मद्रास में आयोजित शास्त्र 2026 में सीवीआरडीई की भागीदारी

भारत के सबसे बड़े छात्र-संचालित तकनीकी उत्सवों में से एक, आईआईटी मद्रास का वार्षिक तकनीकी उत्सव, शास्त्र 2026, 2 से 6 जनवरी 2026 के दौरान आईआईटी मद्रास परिसर में आयोजित किया गया। इस आयोजन के दौरान, सीवीआरडीई ने एमबीटी अर्जुन मार्क-1ए और अर्जुन एआरआरवी के छोटे मॉडल प्रदर्शित किए, जिससे संगठन की नवीनतम तकनीकी प्रगति को छात्र समुदाय के सामने उजागर किया गया।

देश भर के विभिन्न संस्थानों के छात्रों ने उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लिया और सीवीआरडीई के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के साथ विशेष संवाद स्थापित किए। जनसंपर्क टीम ने सीवीआरडीई के प्रमुख उत्पादों का विवरण देने वाली कैटलॉग और पुस्तिकाओं का वितरण करके जागरूकता अभियान चलाया। बड़ी संख्या में छात्रों ने सीवीआरडीई के कार्यक्रमों के बारे में जानने में गहरी

रुचि दिखाई और परियोजना वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों के साथ हुए संवाद युवा छात्रों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक साबित हुए। आयोजनकर्ताओं ने इन प्रयासों की सराहना की।

शास्त्र 2026 के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता माननीय विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर ने की, जिन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई और औपचारिक रूप से कार्यक्रम का उद्घाटन किया।



## डीआरडीई ने जैविक हथियार सम्मेलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया

ग्वालियर स्थित रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई) ने 1-2 दिसंबर 2025 को नई दिल्ली में "जैविक हथियार सम्मेलन के 50 वर्ष: ग्लोबल साउथ के लिए जैव सुरक्षा सुदृढ़ करना" विषय पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका सहित ग्लोबल साउथ के विभिन्न देशों, विशेष रूप से विकासशील देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अपने उद्घाटन संबोधन में माननीय विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर ने जैविक हथियार सम्मेलन के पूर्ण और प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता और भारत के सुस्थापित अप्रसार रिकॉर्ड की पुष्टि

की। डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने अपने मुख्य संबोधन में उल्लेख किया कि भारत एक "जैव-सुरक्षित भारत"—एक ऐसा ढांचा जो आत्मनिर्भर भारत और विजन 2047 के तत्वावधान में वन हेल्थ, जैव-रक्षा और जैव-अर्थव्यवस्था को एकीकृत करता है, की कल्पना करता है; जो ग्लोबल साउथ के साथ साझेदारी के माध्यम से "जैव-सुरक्षित विश्व" को साकार करने की दिशा में एक अग्रदूत के रूप में कार्य करेगा। उन्होंने सामूहिक लचीलेपन को मजबूत करने के लिए प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण, और क्षमता निर्माण में सहयोग करने की भारत की इच्छा को साझा किया।

सम्मेलन में आयोजित प्रदर्शनी में डीआरडीई ने भी भाग लिया, जहां डीआरडीई द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों/उत्पादों का प्रदर्शन किया गया और ग्लोबल साउथ के दर्शकों को लाइव प्रदर्शन प्रस्तुत किए गए। प्रदर्शनी का मार्गदर्शन डीआरडीई ग्वालियर के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ मनमोहन परिदा ने किया। डीआरडीई के उद्योग साझेदार, जैसे कि भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड, हैदराबाद; मायलैब डिस्कवरी सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, पुणे; और इमजेनेक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, भुवनेश्वर, ने भी इस प्रदर्शनी में भाग लिया और अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।



## एसीईएम में ठोस रॉकेट प्रणोदकों के लक्षण वर्णन से संबंधित पाठ्यक्रम

ऊर्जावान सामग्री के लिए अग्रिम केन्द्र (एसीईएम), नासिक ने 7-9 जनवरी 2026 के दौरान "ठोस रॉकेट प्रणोदकों का लक्षण वर्णन और रॉकेट मोटर्स का परीक्षण" विषय पर तीन दिवसीय पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में ठोस प्रणोदक प्रणालियों का अवलोकन, यांत्रिक और बैलिस्टिक गुणों का मूल्यांकन, स्थैतिक परीक्षण एवं ठोस रॉकेट मोटर्स का

गैर-विनाशकारी परीक्षण शामिल था। पाठ्यक्रम का उद्घाटन डॉ ए पी डेश, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एचईएमआरएल, पुणे ने वर्चुअल माध्यम से किया। इस अवसर पर श्री टी वी जगदीश्वर राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महाप्रबंधक, एसीईएम भी उपस्थित थे।

पाठ्यक्रम का शुभारंभ निदेशक, एचईएमआरएल के मुख्य संबोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने मिश्रित ठोस

प्रणोदक में भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने मिशन की सफलता के लिए मिश्रित प्रणोदक के लक्षण वर्णन की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और परीक्षण पद्धतियों में हुई प्रगति और मिश्रित प्रणोदक प्रौद्योगिकियों में हुए हालिया विकास को शामिल किया।

एसीईएम के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महाप्रबंधक श्री टी वी जगदीश्वर राव ने

एसीईएम में हुई उल्लेखनीय तकनीकी प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि धूल रहित धातु पाउडर छानने की प्रणाली, रोटरी वैक्यूम ड्रायर, 5 टन क्षमता वाले वर्टिकल प्लेनेटरी मिक्सर का विकास और मल्टीपल रॉकेट मोटर कास्टिंग तकनीक जैसी नई तकनीकों को अपनाकर एसीईएम में 3 टन से लेकर 50 टन क्षमता वाले मोटरों के प्रसंस्करण तक की प्रगति संभव हो पाई है। उन्होंने यह भी बताया कि एसीईएम ने 2025 में बिना किसी दुर्घटना के रिकॉर्ड तोड़-200 टन प्रणोदक का प्रसंस्करण किया है।

इस पाठ्यक्रम में 12 से अधिक डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के कुल 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ संदीप

कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम निदेशक थे तथा श्री एहतासिमुल हक, वैज्ञानिक 'सी' उप-पाठ्यक्रम निदेशक थे।



## सिनर्जी सम्मेलन 2026 पुणे में आयोजित

28 जनवरी 2026 को आईएफए (अनुसंधान एवं विकास), पुणे स्थित कार्यालय द्वारा, महानिदेशक (एसीई) कार्यालय, पुणे में सिनर्जी कॉन्फ्रेंस 2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर (डॉ) प्रतीक किशोर, डीएस एवं महानिदेशक (एसीई) थे। श्री एम एस सरवानन आईडीएएस, आईएफए (अनुसंधान एवं विकास), पुणे; अतिरिक्त आईएफए (अनुसंधान एवं विकास) और उनकी टीम; अतिरिक्त सीडीए (अनुसंधान एवं विकास) और उनकी टीम; महानिदेशक (एसीई) स्थित कार्यालय के प्रशासनिक निदेशक; एसक्यूआर निदेशक; पीएम निदेशक; एसीई क्लस्टर प्रयोगशालाओं के एमएमजी प्रमुख तथा एनएमआरएल ने सम्मेलन में भाग लिया।

स्वागत संबोधन में, आईएफए (अनुसंधान एवं विकास), पुणे ने समग्र रूप से संगठन के कामकाज में बेहतर तालमेल और उच्च दक्षता प्राप्त करने के लिए आईएफए, जेसीडीए और सीएफए के बीच इस तरह के विमर्श की आवश्यकता पर बल दिया और सभी हितधारकों के बीच विचारों के संगम और सामंजस्य का आग्रह किया।



प्रोफेसर (डॉ) प्रतीक किशोर, डीएस एवं डीजी (एसीई), ने अपने मुख्य संबोधन में कार्य की सुचारु, कुशल, और समयबद्ध प्रगति के लिए सभी हितधारकों के बीच समन्वय पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान और समापन

सत्र में प्रयोगशालाओं द्वारा उठाए गए कई बिंदुओं को भी स्पष्ट किया गया। यह सम्मेलन सभी हितधारकों के लिए चिंताओं के आदान-प्रदान और अधिक समन्वयपूर्ण भविष्य की दिशा तय करने के लिए एक मूल्यवान मंच साबित हुआ।

## एनआरबी द्वारा बायोमिमेटिक स्वायत्त अंतर्जलीय वाहन की कार्यशाला और प्रदर्शन

डीआरडीओ-नौसेना अनुसंधान बोर्ड (एनआरबी) के तत्वावधान में 3-4 फरवरी 2026 को बायोमिमेटिक स्वायत्त अंतर्जलीय वाहन (AUV) की दो दिवसीय कार्यशाला और लाइव प्रदर्शन का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बायोमिमेटिक AUV की प्रमुख डिजाइन विशेषताओं, परिचालन क्षमताओं और नौसेना एवं रक्षा क्षेत्र में इसके संभावित अनुप्रयोगों को प्रदर्शित किया गया। बायोमिमेटिक AUV को आईआईटी खड़गपुर, आईआईटी मद्रास, आईआईएससी बेंगलुरु और डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं-एनएसटीएल तथा एनपीओएल के विशेषज्ञ संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं की एक टीम द्वारा एनआरबी के अनुदान से विकसित किया गया है। इस कार्यशाला में आईआईटी खड़गपुर से प्रो० सी एस कुमार, प्रो० विश्वनाथ नागराजन और डॉ० किरण विजयन; आईआईटी मद्रास से प्रो० अशोकन थोंडियाथ और डॉ० जयसूर्या वी; तथा आईआईएससी-बेंगलुरु से प्रो० रघुरामन एन गोवर्धन, प्रो० एम एस बोबजी और प्रो० आर के शुक्ला शामिल थे।

कार्यशाला का उद्घाटन एवं अध्यक्षता डॉ० एच एन दास, वैज्ञानिक

‘एच’ ने की, जिन्होंने भविष्य के नौसैनिक अनुप्रयोगों के लिए बायोमिमेटिक प्रणालियों के रणनीतिक महत्व पर प्रकाश डाला और जलमग्न प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने में स्वदेशी अनुसंधान तथा डीआरडीओ-शिक्षाविद सहयोग की भूमिका पर बल दिया।

एनआरबी के सदस्य सचिव डॉ० वी बी एस अय्यंगार ने सहयोग के माध्यम से जटिल नौसैनिक चुनौतियों का समाधान करने में सतत अकादमिक अनुसंधान और नवाचार के महत्व पर जोर दिया

और बीएयूवी विकास को एक उदाहरण के रूप में लेते हुए मौलिक अनुसंधान को प्रोटोटाइप में बदलने की प्रक्रिया का वर्णन किया।

इस कार्यशाला और प्रदर्शन ने, डीआरडीओ के उद्देश्यों के अनुरूप, अकादमिक जगत और डीआरडीओ के बीच सहयोग को मजबूत करने, तकनीकी ज्ञान साझा करने एवं स्वदेशी अनुसंधान तथा अभियांत्रिकी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में कार्य किया।



## अनुसंधान एवं विकास (ई) द्वारा मिश्रित उत्पादों के लिए उपकरण डिजाइन और निर्माण पर पाठ्यक्रम

पुणे स्थित अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (ई) (आर एंड डीई(ई)) द्वारा 19-21 जनवरी 2026 के दौरान ‘कंपोजिट उत्पादों के लिए टूल डिजाइन और निर्माण’ विषय पर तीन दिवसीय पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ० मकरंद जोशी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर एंड

डीई(ई) ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने इस पाठ्यक्रम के महत्व पर बल दिया, क्योंकि यह विषय किसी भी शैक्षणिक पाठ्यक्रम में आसानी से उपलब्ध नहीं है, और प्रतिभागियों से इस पाठ्यक्रम का पूरा लाभ उठाने का आग्रह किया। कुल 41 प्रतिभागियों ने

पाठ्यक्रम में भाग लिया। मोल्ड और उत्पाद डिजाइन एवं निर्माण से जुड़े अनुसंधान एवं विकास तथा उद्योगों के वक्ताओं ने व्याख्यान दिए।

इस पाठ्यक्रम के दौरान, केस स्टडी के साथ-साथ कंपोजिट निर्माण और टूल डिजाइन से संबंधित विभिन्न विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों

को VARTM और RFI प्रक्रियाओं द्वारा कंपोजिट निर्माण का व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त हुआ, जो ऑटोक्लेव से मुक्त प्रक्रियाएं हैं और मोटी-बड़ी तथा पतली-छोटी संरचनाओं के निर्माण के लिए उपयुक्त हैं। पाठ्यक्रम निदेशक श्री राजेंद्र के गुप्ता, वैज्ञानिक 'एफ' ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ पाठ्यक्रम का समापन किया।



## 2026-IEEE इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इंटेलिजेंट सिस्टम्स, स्मार्ट एंड ग्रीन टेक्नोलॉजीज में डीआरडीओ की भागीदारी

6-7 फरवरी 2026 को IEEE विजाग बे सेक्शन तथा नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम द्वारा संयुक्त रूप से IEEE इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इंटेलिजेंट सिस्टम्स, स्मार्ट एंड ग्रीन टेक्नोलॉजीज (ICISSGT-2026) का आयोजन किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में, डॉ आर वी हारा प्रसाद, महानिदेशक (एनएस एंड एम), ने इस बात पर प्रकाश डाला कि "टिकाऊ और ऊर्जा-कुशल समाधानों द्वारा समर्थित बुद्धिमान और स्वायत्त प्रौद्योगिकियां, अगली पीढ़ी के रक्षा प्रणालियों के लिए प्रमुख प्रवर्तक बन रही हैं।"

डॉ अब्राहम वर्गीज, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनएसटीएल ने प्रयोगशाला की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, प्रयोगशाला नौसेना और रक्षा प्रणालियों के समर्थन में अत्याधुनिक अनुसंधान, परीक्षण और मूल्यांकन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। ICISSGT जैसे सम्मेलन डीआरडीओ प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों के बीच तालमेल को मजबूत करते हैं और युवा शोधकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों को रणनीतिक महत्व की प्रौद्योगिकियों में योगदान देने के लिए एक प्रभावी मंच

प्रदान करते हैं।

ICISSGT-2026 में देश भर से वरिष्ठ डीआरडीओ अधिकारियों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया। अमीरात के विशेषज्ञों ने रक्षा-उन्मुख और बुद्धिमान, स्मार्ट और हरित प्रौद्योगिकियों के दोहरे उपयोग से संबंधित मुख्य व्याख्यान और तकनीकी प्रस्तुतियाँ दीं।

ICISSGT-2026 के सभापति डॉ एस लक्ष्मीनारायण ने शिक्षा जगत और उद्योगों के बीच सार्थक सहयोग के लिए इस प्रकार के सम्मेलनों के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। उन्होंने आगे बताया कि ICISSGT-2026 को 2300 से अधिक पांडुलिपियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से लगभग 100 शोधपत्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं और बाद में IEEE एक्सप्लोर में प्रकाशित किए जाएंगे।



## डीआईबीटी द्वारा उन्नत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और खाद्य प्रौद्योगिकी पर पाठ्यक्रम

जैव रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर ने 16-19 फरवरी 2026 के दौरान "उन्नत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और खाद्य प्रौद्योगिकी (ASMAFT-22)" विषय पर चार दिवसीय पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में सेना के 18 एएससी अधिकारियों और बंगलुरु स्थित एएससी केंद्र एवं कॉलेज के दो प्रशिक्षकों ने भाग लिया। व्याख्यानों में राशन प्रौद्योगिकी और प्रबंधन, क्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले परीक्षण किट, फलों और सब्जियों की कटाई के बाद की गुणवत्ता और प्रतिकूल वातावरण में ताजे राशन का प्रबंधन, बुनियादी पोषण अवधारणा, सैनिकों की आहार संबंधी आवश्यकताएं और आहार प्रबंधन, खाद्य विनियमन आदि विषयों पर जानकारी दी गई।

खाद्य प्रसंस्करण, फ्रोजन और चिल्ड मीट/चिकन, गुणवत्ता नियंत्रण

और प्रबंधन में व्यापक ज्ञान प्रदान करने के लिए वरिष्ठ सेना अधिकारियों को अत्याधुनिक और नवीन खाद्य प्रौद्योगिकियों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत कर्नाटक मिल्क फेडरेशन (केएमएफ) डेयरी, मैसूर; सीएफटीआरआई, मैसूर; और आईटीसी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, नंजनगुड का दौरा आयोजित किया गया ताकि दूध प्रसंस्करण, अनाज

की पिसाई और आरटीई खाद्य पदार्थों तथा आलू चिप्स के प्रसंस्करण और उत्पादन के विभिन्न तकनीकी पहलुओं को समझा जा सके।

डीआईबीटी के केंद्र प्रमुख डॉ आर कुमार ने पाठ्यक्रम प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का समापन पाठ्यक्रम समन्वयक, वैज्ञानिक 'एफ' डॉ जी फानी कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



## एनएससीआई द्वारा कैब्स में संयंत्र सुरक्षा प्रशिक्षण

नेशनल सेप्टी काउंसिल इंडिया (एनएससीआई) के विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा बंगलुरु स्थित वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स) में 21-23 जनवरी 2026 के दौरान "संयंत्र सुरक्षा" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इस प्रशिक्षण में किसी भी प्रतिष्ठान में सुरक्षा मानदंडों की नियामक और वैधानिक आवश्यकताओं के महत्व पर बल दिया गया, जिसमें सभी के लिए सुरक्षा जागरूकता के महत्व को सटीक रूप से दर्शाया गया और इसमें प्रमुख सुरक्षा पहलुओं जैसे कि खतरे की पहचान और जोखिम मूल्यांकन, ऊंचाई पर काम करते समय सुरक्षा, व्यावसायिक स्वास्थ्य, और औद्योगिक स्वच्छता, रसायनों के संचालन एवं परिवहन में सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा, विद्युत

सुरक्षा, मशीन और सामग्री संचालन में सुरक्षा, व्यवहार-आधारित सुरक्षा प्रबंधन, सुरक्षा ऑडिट करने के तरीके और आपातकालीन तैयारी आदि को शामिल किया गया।

कैब्स की निदेशक एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक सुश्री पी संध्या ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ के राजलक्ष्मी मेनन, डीएस एवं महानिदेशक

(एयरो) उपस्थित थीं। अपने संबोधन में निदेशक, कैब्स तथा महानिदेशक एयरो ने सुरक्षा प्रशिक्षण के महत्व पर बल देते हुए कहा कि यह क्षेत्र के विशेषज्ञों से सुरक्षा के सभी पहलुओं पर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का एक मंच है। सुरक्षा समिति के अध्यक्ष डॉ एम आर शंकर, वैज्ञानिक 'जी' समग्र प्रशिक्षण समन्वयक थे, तथा समूह कप्तान सर्वेश राय उप समन्वयक थे।



## डीआरडीई में शिकायत निवारण पर कार्यशाला का आयोजन

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई), ग्वालियर में 19-20 दिसंबर 2025 के दौरान 'डीआरडीओ में शिकायत निवारण' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य डीआरडीओ के शिकायत निवारण ढांचे, इसके कार्यान्वयन के ढांचे और कर्मचारी/नागरिक शिकायत निवारण से संबंधित मुद्दों का समाधान करना था। डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं/एसएयू में लास्ट माइल ऑफिसर (एलएमओ) के रूप में तैनात 80 से अधिक नोडल

अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ मयंक द्विवेदी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एचआर) ने डॉ मनमोहन परिदा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डीआरडीई तथा डॉ एस के द्विवेदी, निदेशक डीओपी की उपस्थिति में किया। डीआरडीई निदेशक ने अपने स्वागत संबोधन में प्रतिभागियों को डीआरडीई की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। डॉ रविंद्र सिंह, निदेशक, डीएमएस ने अपने समापन संबोधन में नागरिक-केंद्रित सेवा वितरण,

शिकायत निवारण में संवेदनशीलता और निर्धारित समय-सीमा के पालन पर जोर दिया। अंतःक्रियात्मक व्याख्यान सत्रों में CPGRAMS की संपूर्ण कार्यप्रणाली को शामिल किया गया, जिसमें शिकायतों का पंजीकरण, जांच प्रक्रिया, समय पर निपटान, प्रभावी उत्तर तैयार करना, शिकायत निवारण तंत्र और शिकायत निवारण की गुणवत्ता में सुधार के लिए सर्वोत्तम पद्धतियां शामिल थीं। डॉ मुकेश कुमार मेघवंशी, वैज्ञानिक 'एफ', डीआरडीई इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव थे।



## हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में डीआरडीओ

हैदराबाद स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी ने 3 फरवरी 2026 को वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों के लिए आयोजित 18वें मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान गृह मंत्रालय, सीएपीएफ और पुलिस बलों के साथ डीआरडीओ के जुड़ाव पर एक प्रस्तुति देने का अनुरोध किया था। श्री संगीता राव आचार्य अड्डांकी, निदेशक, एलआईसी; श्री गौरव वर्मा वैज्ञानिक 'एफ' एआरडीई; तथा श्री किशोर कुमार, वैज्ञानिक 'ई', डीएलआरएल ने आंतरिक सुरक्षा और सीमा निगरानी के लिए उपयुक्त डीआरडीओ प्रौद्योगिकी जैसे छोटे हथियार और गोला-बारूद, एंटी-ड्रोन

सिस्टम, सीमा निगरानी, सैनिक सुरक्षा उपकरण, कानून व्यवस्था के लिए गैर-घातक उपकरण, चेहरे की पहचान प्रणाली आदि पर प्रस्तुतियां दीं।

डीजीपी, एडीजीपी और वरिष्ठ आईजी रैंक के वरिष्ठ प्रतिभागियों ने

डीआरडीओ के वैज्ञानिकों के साथ सक्रिय रूप से बातचीत की और कहा कि डीआरडीओ के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित कई समाधान उनके संचालन के लिए प्रासंगिक हैं और वे उन्हें लागू करने पर विचार करेंगे।



## कैम्स में लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्यशाला

22 जनवरी 2026 को वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैम्स), बेंगलुरु ने "लैंगिक संवेदनशीलता" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। श्री सुनील के श्रीवास्तव (सेवानिवृत्त), मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, एलआरडीई ने "लैंगिक संवेदनशीलता" पर व्याख्यान दिया। कार्यशाला में कुल 42 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य सभी स्तरों के कर्मचारियों को POSH अधिनियम के प्रावधानों और "लैंगिक संवेदनशीलता" के बारे में जागरूक करना था। कार्यशाला को संवादात्मक बनाया गया, केस स्टडी पर चर्चा की गई और इसने प्रतिभागियों को खुले तौर पर सीखने,

सम्मानजनक व्यवहार को बढ़ावा देने और अपने पेशेवर वातावरण में सुरक्षित और सशक्त महसूस करने का अवसर भी प्रदान किया।



## इनमास में ब्रिगेडियर एस के मजूमदार की स्मृति में 30वां व्याख्यान

दिल्ली स्थित नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) ने ब्रिगेडियर एस के मजूमदार मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में 16 जनवरी 2026 को 30वें ब्रिगेडियर एस के मजूमदार स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। अखिल भारतीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के परमाणु चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ राकेश कुमार ने 'थेरानोस्टिक्स: प्रिसिशन कैंसर केयर' विषय पर व्याख्यान दिया। ट्रस्ट के संयुक्त सचिव डॉ अभिनव जैमिनी, वैज्ञानिक 'एफ' ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ सुधीर चांदना, निदेशक, इनमास तथा ब्रिगेडियर एस के मजूमदार मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष ने उद्घाटन संबोधन दिया तथा ब्रिगेडियर एस के मजूमदार तथा इनमास की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को याद किया। ट्रस्ट की सदस्य डॉ रश्मी अग्रवाल ने वक्ता का परिचय कराया। वक्ता ने ब्रिगेडियर एस के मजूमदार

की अग्रणी भूमिका पर चर्चा की। एस के मजूमदार ने थायराइड रोगियों के उपचार के लिए रेडियो-आयोडीन को एक थेरानोस्टिक उपकरण के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्हें भारत में थेरानोस्टिक्स का जनक कहा जाता है। ब्रिगेडियर एस के मजूमदार मेमोरियल ट्रस्ट

द्वारा प्रतिवर्ष विकिरण चिकित्सा डिप्लोमा (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के अधीन स्नातकोत्तर चिकित्सा डिप्लोमा) में शीर्ष छात्र को सर्वश्रेष्ठ डीआरएम छात्र पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार में एक पदक और एक प्रशस्ति पत्र शामिल है। ट्रस्ट के सचिव डॉ रौनक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।



## भविष्य की उन्नत युद्धक वाहन प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला

डीआरडीओ-इंडस्ट्री एकेडेमिया रामानुजन सेंटर ऑफ एकसीलेंस (डीआईए-आरसीओई) ने डीआरडीओ के भविष्य प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय (डीएफटीएम) के सहयोग से 13 दिसंबर 2025 को आईआईटीएम रिसर्च पार्क, चेन्नई में फ्यूचरिस्टिक एडवांस्ड कॉम्बैट व्हीकल टेक्नोलॉजीज (FACT 2025) पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने डीएस एवं डीजी (एसीई) डॉ प्रतीक किशोर की गरिमामयी उपस्थिति में किया। इस कार्यशाला में देश भर से डीआरडीओ के वैज्ञानिक, भारतीय सेना के उपयोगकर्ता, शिक्षाविद, उद्योग

विशेषज्ञ, स्टार्टअप्स और एमएसएमई एकत्रित हुए, जिससे बख्तरबंद और लड़ाकू वाहन प्रौद्योगिकियों में नवाचार और सहयोग को गति देने के लिए एक राष्ट्रीय मंच का निर्माण हुआ।

कार्यशाला का उद्देश्य नवप्रवर्तित अनुसंधान संस्कृति के साथ भविष्य की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की पहचान

करना और भविष्य की उन्नत लड़ाकू वाहन प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार करना था। सीवीआरडीई ने लड़ाकू वाहनों के लघु मॉडल (MBT अर्जुन मार्क-1ए, अर्जुन AARV, भारतीय लाइट टैंक आदि) प्रदर्शित करके इस कार्यक्रम में भाग लिया।



## रक्षा मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम 'विकिरण प्रहरी' के अंतर्गत AFMS के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) ने रक्षा मंत्रालय के 'विकिरण प्रहरी' प्लैगशिप कार्यक्रम के तहत सशस्त्र बलों के संबद्ध स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों (एएचपी) के लिए विकिरण आपातकालीन चिकित्सा प्रबंधन हेतु व्यावहारिक कार्यक्रम "विकिरण बायोडोसिमेट्री एवं बायोमार्कर प्रशिक्षण" का शुभारंभ किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 नवंबर 2025 को डॉ सुधीर चांदना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, तथा सर्जन वाइस एडमिरल आरती सरिन, एवीएसएम, वीएसएम, डीजीएएफएमएस द्वारा औपचारिक रूप से हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओए) के अनुसार आयोजित किया गया। सैन्य अभियानों, राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा प्रतिक्रिया और अनुसंधान एवं परमाणु आपदाओं के

लिए तैयारियों के संदर्भ में ये क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बायोडोसिमेट्री इस तैयारी का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो विकिरण जोखिम के बाद समय पर खुराक का आकलन, चिकित्सा प्राथमिक उपचार और साक्ष्य-आधारित नैदानिक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। इस ढांचे के भीतर, सशस्त्र बलों के एएचपी एक महत्वपूर्ण और अग्रणी भूमिका निभाते हैं। विकिरण स्वास्थ्य पेशेवरों (एएचपी) के पहले बैच ने 5

से 16 जनवरी 2026 तक दो सप्ताह का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया। यह प्रशिक्षण त्रैमासिक आधार पर आयोजित किया जाएगा ताकि देशभर के सभी एएचपी की भागीदारी सुनिश्चित हो सके और विकिरण आपात स्थितियों से निपटने के लिए देश की तैयारियों को और मजबूत किया जा सके। डॉ शुचि भागी, वैज्ञानिक 'डी', इनमास, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की समन्वयक थीं।



## राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रम

### सीएएस, हैदराबाद

हैदराबाद स्थित उन्नत प्रणाली केंद्र (सीएएस) ने अपने कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम को तीन बैचों में सफलतापूर्वक संपन्न किया। सभी कैंडिडेटों के कुल 106 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रमाणित मास्टर प्रशिक्षकों श्री एम सत्यनारायण, वैज्ञानिक 'एफ',

डीजीएमएस कार्यालय; श्री देवला रामावत, वैज्ञानिक 'ई', सीएएस; तथा श्री बी शंकर राव, वैज्ञानिक 'ई', डीएलआरएल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों में सेवा भाव विकसित करना और क्षमता निर्माण आयोग (सीबीसी) के मार्गदर्शन में i-GoT कर्मयोगी प्लेटफॉर्म के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के प्रति कर्तव्य,

उत्तरदायित्व और प्रतिबद्धता की भावना को बढ़ावा देकर नागरिक-केंद्रित कार्यबल का निर्माण करना है। सीएएस के डीएस एवं निदेशक डॉ शिवसुब्रमण्यम एन ने सीएएस कर्मचारियों को कार्यक्रम में भाग लेने के साथ-साथ iGOT कर्मयोगी प्लेटफॉर्म पर अनिवार्य ऑनलाइन पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया।



### कैसडिक, बेंगलुरु

राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन बेंगलुरु स्थित युद्धक विमान प्रणाली विकास एवं एकीकरण केंद्र (कैसडिक) द्वारा जनवरी 2026 में अपने कर्मचारियों के लिए किया गया। यह प्रशिक्षण मास्टर प्रशिक्षक श्री

राजू बी डोड्डामणि, वैज्ञानिक 'ई' तथा श्री अजीत कुमार, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा प्रदान किया गया। उद्घाटन समारोह में कैसडिक के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं केंद्र प्रमुख श्री राजीव मराठे उपस्थित थे। यह प्रशिक्षण कैसडिक के सभी

कर्मचारियों के लिए 6 बैचों में आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने बताया कि यह प्रशिक्षण सेवा भाव को मजबूत करने में सहायक रहा, जो दैनिक कार्यों के निष्पादन के दौरान अत्यंत महत्वपूर्ण है।



## डीएचआरडी, मुख्यालय

मानव संसाधन विकास निदेशालय (डीएचआरडी), डीआरडीओ मुख्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित तथा नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा संचालित i-Got से संबंधित मुद्दों पर एक दिवसीय कार्यशाला 20 जनवरी 2026 को इनमास में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। श्री राजकुमार, वैज्ञानिक 'ई', डीएचआरडी ने सत्रों का नेतृत्व किया और i-Got प्लेटफॉर्म से संबंधित व्यावहारिक मुद्दों तथा i-Got पोर्टल पर अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपलोड करने के विषय में बताया, जिन्हें डीआरडीओ अधिकारियों के APAR से जोड़ा जाना है।

इस कार्यशाला में डीआरडीओ मुख्यालय और डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/संस्थानों के प्रमुख और प्रशासनिक अधिकारी शामिल हुए। संवादात्मक चर्चाओं और अनुभव साझा करने वाले सत्रों ने बहुमूल्य जानकारी प्रदान की और प्रतिभागियों को परिचालन संबंधी विभिन्न चुनौतियों के व्यावहारिक



समाधान खोजने में सक्षम बनाया।

## आईआरडीई, देहरादून

यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई), देहरादून ने दिसंबर 2025 और जनवरी 2026 के दौरान विभिन्न बैचों में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का अंतिम बैच 14 जनवरी 2026 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत परिचय और पूर्व-कार्यक्रम सर्वेक्षण से हुई, जिसके बाद इसके चार मॉड्यूल संचालित किए गए। आईआरडीई के निदेशक एवं उत्कृष्ट

वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और प्रतिभागी के रूप में भी इसमें भाग लिया। आईआरडीई के चार मास्टर प्रशिक्षकों, डॉ सुनीता, वैज्ञानिक 'एफ', श्री आशीष कुमार भूरिया, वैज्ञानिक 'एफ', श्री एच पी अग्रहरि, वैज्ञानिक 'एफ' तथा श्री कमल कुमार गुलाटी, वैज्ञानिक 'ई' ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया। आईआरडीई के निदेशक ने मास्टर प्रशिक्षकों को कार्यक्रम के संचालन के लिए सभी आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया। कार्यक्रम के दौरान कुल 535 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।



## एनपीओएल के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए आंतरिक पाठ्यक्रम

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने वर्ष 2026 में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के लिए 20-21 जनवरी 2026 को 'इनक्रीऑन' (एनपीओएल के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए आंतरिक पाठ्यक्रम) नामक दो दिवसीय

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया। एनपीओएल लगातार 14 वर्षों से 'इनक्रीऑन' का आयोजन कर रहा है। इसका उद्देश्य सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के बाद एक सार्थक और उत्पादक जीवन जीने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस

करना है। पाठ्यक्रम का उद्घाटन एनपीओएल के उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक डॉ दुवुरी शेषागिरी ने किया, जिन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और महत्व पर प्रकाश डाला। मानव संसाधन विकास परिषद की अध्यक्ष श्रीमती हेमा

एम, वैज्ञानिक 'जी' ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और पाठ्यक्रम के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

इस पाठ्यक्रम में वित्तीय प्रबंधन, पेंशन लाभ, स्वास्थ्य सेवा, सीजीएचएस और सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के कानूनी दायित्वों जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा संचालित सत्र शामिल हैं। पाठ्यक्रम की शुरुआत कोच्चि स्थित सीयूएसएटी के सहायक प्रोफेसर डॉ मनु मेल्विन जॉय के "अपनी सेवानिवृत्ति के जीवन को फिर से जीवंत करें" विषय पर व्याख्यान से हुई। पाठ्यक्रम में एर्नाकुलम स्थित मेडिकल ट्रस्ट अस्पताल के जराचिकित्सक डॉ जिनो जॉय द्वारा "स्वस्थ वृद्धावस्था" पर एक विशेष सत्र भी शामिल था, जिसमें उम्र से संबंधित स्वास्थ्य विकारों पर चर्चा की गई।



## डीआरएल द्वारा अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती गांवों में कृषि से संबंधित तकनीकों का प्रौद्योगिकी प्रदर्शन

7-10 फरवरी 2026 के दौरान रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल), तेजपुर द्वारा अरुणाचल प्रदेश के बिचोम जिले के नाफरा ब्लॉक में भारत-चीन सीमा से लगे सुदूर सीमावर्ती गांवों में नागरिक-सैन्य संलयन कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि-संबद्ध तकनीकों का एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया

गया। इस प्रदर्शन में दो मॉड्यूल शामिल थे: सैद्धांतिक और क्षेत्र में प्रत्यक्ष प्रदर्शन। बड़ी इलायची की खेती के लिए कृषि-संबद्ध तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया गया। लाभार्थी किसानों को खेती के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि प्रवर्धन, नर्सरी तैयार करना, स्थल चयन, रोपण, पोषक तत्व एवं जल प्रबंधन, मल्लिचिंग,

छाया प्रबंधन, कीट प्रबंधन, कटाई और कटाई के बाद की प्रक्रियाओं से परिचित कराया गया। प्रौद्योगिकी प्रदर्शन में 26 गांवों के कुल 267 लाभार्थी परिवारों ने भाग लिया। उन्हें कृषि संबंधी सामग्री, जैसे कि इलायची काटने वाले चाकू, कैंची, नीम की गिरी का तेल और नीम की खली वितरित की गई।



## सैन्य इकाइयों को संरक्षित खेती प्रौद्योगिकी पर शीतकालीन प्रशिक्षण

26 नवंबर 2025 को अरुणाचल प्रदेश के तवांग में मुख्यालय 4 कोर के अंतर्गत 190 और 40 माउंटेन ब्रिगेड की विभिन्न सैन्य इकाइयों के डीआरडीओ ग्रीनहाउस उपयोगकर्ताओं के लिए ताजी सब्जियों की संरक्षित खेती तकनीक पर प्रशिक्षण-सह-प्रदर्शन आयोजित किया गया। पालक, मूली, धनिया, चुकंदर, और गाजर के बीज जैसे कृषि निविष्ट भी प्रदान किए गए। प्रत्येक डीआरडीओ ग्रीनहाउस उपयोगकर्ता को सब्जी खेती तकनीक कैलेंडर भी दिया गया ताकि जवानों को ग्रीनहाउस के अंदर पत्तेदार और जड़ वाली सब्जियों की खेती के महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सके, जो उनके आहार के लिए ताजी हरी सब्जियों का एक स्रोत है।



## डीआईपीआर द्वारा आयोजित डॉ सोहन लाल विशिष्ट व्याख्यान

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली ने डॉ सोहन लाल विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत दूसरे व्याख्यान का आयोजन किया, जिसमें डीआरडीओ के पूर्व महानिदेशक (आर एंड एम), डॉ मनु कोरुल्ला ने "विकसित भारत के लिए मनोवैज्ञानिक शक्तियां और सहायक कारक" विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

डीआईपीआर की निदेशक डॉ निशी मिश्रा ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह श्रृंखला वरिष्ठ वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों, सैन्य नेताओं और विभिन्न रक्षा क्षेत्रों के शोधकर्ताओं द्वारा साझा की गई अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण के माध्यम से वैज्ञानिक बिरादरी को अभूतपूर्व विचारों और उभरते रुझानों से अवगत कराएगी।

अपने अतिथि व्याख्यान में, डॉ मनु कोरुल्ला ने रक्षा क्षेत्र के साथ-साथ जीवन के हर पहलू में मनोविज्ञान



के महत्व पर बल दिया। वक्ता ने मनोविज्ञान के व्यापक क्षेत्र का भी वर्णन किया, जिसमें उभरती प्रौद्योगिकियों को मनोवैज्ञानिक आकलन में शामिल करने से लेकर मानव-मशीन समन्वय, अंतरिक्ष मनोविज्ञान और राष्ट्र के सुख सूचकांक को ऊपर उठाने तक के विषय शामिल हैं, और इन सभी में पारंपरिक पद्धतियों के अनछुए ज्ञान का उपयोग किया गया है। उन्होंने

वैज्ञानिक समुदाय से अटूट अनुशासन, सटीक एकाग्रता और दृढ़ निरंतरता के साथ राष्ट्रीय सेवा के प्रति फिर से प्रतिबद्ध होने का आह्वान किया, ताकि हम विकसित भारत की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें।

डॉ निशी मिश्रा ने अतिथि वक्ता को सम्मानित किया और उनके ज्ञान और सार्थक दृष्टिकोण के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

## डीआईपीआर द्वारा आयोजित लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम

रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली ने डॉ सिराज उर रहमान, मानव संसाधन विकास संस्थान, बेंगलुरु के मार्गदर्शन में 19-23 जनवरी 2026 के दौरान "योग्यता मानचित्रण, मूल्यांकन और विकास प्रक्रिया" विषय पर पांच दिवसीय लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण का उद्घाटन कार्मिक निदेशालय एवं मानव संसाधन विकास निदेशालय के निदेशक डॉ संजय के द्विवेदी ने किया। डॉ यू के सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसएसएस) ने भी प्रशिक्षण के दौरान अपने विचार साझा किए। डीआईपीआर की निदेशक डॉ निशी मिश्रा ने किसी भी संगठन के लिए योग्यता मानचित्रण के महत्व, इस दिशा में प्रयोगशाला द्वारा की गई अनुसंधान एवं विकास पहलों पर प्रकाश डाला और सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान संकाय सदस्यों के

साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रतिभागियों को विभिन्न दक्षता मानचित्रण मॉडल, कार्यप्रणालियों और मूल्यांकन तकनीकों पर प्रशिक्षित किया गया। भर्ती से लेकर उत्तराधिकार योजना तक संपूर्ण समाधान के रूप में

ढांचा तैयार करने के लिए व्यावहारिक गतिविधियों और ज्ञान का प्रतिभागियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। समापन समारोह और प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में दिल्ली स्थित भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र (आरएसी) की निदेशक श्रीमती के वी प्रभा भी उपस्थित थीं।



### राजभाषा गतिविधियाँ

## डीएमएसआरडीई में संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी (एनएस एंड एम क्लस्टर)

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने 22-23 जनवरी 2026 को संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी (एनएस एंड एम क्लस्टर) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। सम्मेलन का विषय था 'विकसित भारत की परिकल्पना में डीआरडीओ की भूमिका'। सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ आर वी हारा प्रसाद, डीएस एवं डीजी (एनएसएंडएम) ने डीएमएसआरडीई के निदेशक डॉ किंग्सुक मुखोपाध्याय, उत्कृष्ट

वैज्ञानिक एवं निदेशक की उपस्थिति में किया। सम्मेलन में डीआरडीओ की 21 प्रयोगशालाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जो वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों

में हिंदी को बढ़ावा देने की उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस कार्यक्रम में सम्मेलन स्मारिका का अनावरण भी किया गया, जिसमें प्रतिभागियों



द्वारा हिंदी में लिखे गए 71 शोध पत्र शामिल हैं। कुल 40 शोध पत्रों को मौखिक प्रस्तुति के लिए और 31 शोध पत्रों को पोस्टर प्रस्तुति के लिए चुना गया। सम्मेलन के दो दिनों के दौरान मौखिक प्रस्तुति के लिए छह तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। सांस्कृतिक संध्या ने संगोष्ठी में एक जीवंत रंग भर

दिया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में संगोष्ठी में बड़ी संख्या में तकनीकी शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए डीआरडीओ प्रयोगशालाओं की जबरदस्त प्रतिक्रिया की सराहना की, जो दर्शाता है कि डीआरडीओ विकसित भारत की दिशा में सही ढंग से आगे बढ़ रहा है। डीएमएसआरडीई के निदेशक ने कहा

कि प्रयोगशाला को ऐसे आयोजन की मेजबानी करने पर गर्व है, जो अनुसंधान में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने में सहायक होगा। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ राकेश कुमार गुप्ता, वैज्ञानिक 'एफ' तथा श्रीमती उषा सुरेश, सहायक निदेशक (ओएल), राजभाषा अधिकारी द्वारा किया गया।

## उच्च योग्यता प्राप्त की



### एआरडीई, पुणे

आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एआरडीई), पुणे के श्री अजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक 'एफ', को "स्लॉटेड संरचनाओं का उपयोग करके माइक्रोवेव सर्किट के प्रदर्शन में वृद्धि" शीर्षक वाले शोध प्रबंध के लिए रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईएटी),

पुणे से पीएचडी की उपाधि से सम्मानित किया गया है।



### इनमास, दिल्ली

दिल्ली स्थित नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) से डॉ प्रदीप गोस्वामी, वैज्ञानिक 'ई' को शोभित इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मेरठ द्वारा उनके शोध प्रबंध "अल्ट्रा वायलेट-सी (UVC) विकिरण मापन के लिए रेडियोक्रोमिक डोसिमेट्री

अध्ययन" के लिए पीएचडी की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

## पुरस्कार

### डीआईबीटी, मैसूर

डॉ आर कुमार, वैज्ञानिक 'जी' एवं रक्षा जैव-रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर के केंद्र प्रमुख को भारत की रक्षा और अंतरिक्ष खाद्य प्रणालियों में उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मान में प्रतिष्ठित फेलो ऑफ द एसोसिएशन ऑफ फूड साइंटिस्ट्स एंड टेक्नोलॉजिस्ट्स (इंडिया) (एफएएफएसटी), पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

रक्षा जैव-रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर के डॉ डी डी वादिकर, वैज्ञानिक 'एफ', को खाद्य वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी संघ भारत (एफएएसटीआई) द्वारा अनाज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 'प्रोफेसर कार्ल होसेनी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

एफएएफएसटी पुरस्कार 18 दिसंबर 2025 को राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी,

उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान, तंजावुर (एनआईएफटीईएम-टी) में आयोजित 31वें भारतीय खाद्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद् सम्मेलन - 2025 (आईसीएफओएसटी-2025) के दौरान प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार कर्नाटक के कोडगु विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर अशोक एस अलुर द्वारा प्रदान किया गया।



## कैम्स में स्वास्थ्य शिविर

बंगलुरु स्थित वायुवहित प्रणाली केन्द्र (कैम्स) की निदेशक, सुश्री पी संध्या, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने कैम्स कल्याण समिति द्वारा डॉ एम आर शंकर, वैज्ञानिक 'जी' की अध्यक्षता में सकरा वर्ल्ड हॉस्पिटल के सहयोग से आयोजित एक दिवसीय सामान्य

स्वास्थ्य जांच और रक्तदान अभियान का उद्घाटन किया। यह अभियान 19 दिसंबर 2025 को संपन्न हुआ। श्री एस सरवानन, तकनीकी अधिकारी 'सी', श्री विजय महतो, तकनीकी अधिकारी 'ए', श्री जयकृष्ण, तकनीकी अधिकारी 'बी' तथा कैम्स कल्याण समिति के अन्य

सदस्यों ने शिविर के सफल आयोजन में योगदान दिया। परिसर में सभी कर्मियों को स्वास्थ्य जांच कराने का अवसर मिला। 3 महिलाओं सहित 77 लोगों ने रक्तदान किया। 139 कर्मियों की स्वास्थ्य जांच भी की गई और 105 लोगों की नेत्र जांच की गई।



## एनपीओएल में स्वास्थ्य जागरूकता वार्ता

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने 20 जनवरी 2026 को स्वास्थ्य जागरूकता वार्ता का आयोजन किया। विषय था, "नींद, खराटे, नींद में खलल और ऑब्स्ट्रक्टिव स्लीप एपनिया के प्रति जागरूक होने का समय आ गया है।" यह कार्यक्रम कर्मचारियों को नींद संबंधी विकारों और उनके समग्र स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जागरूक करने के लिए आयोजित किया गया था। जागरूकता वार्ता में डॉ सुनील अब्राहम, एमडीएस, ऑर्थोडॉन्टिस्ट एवं डेंटल सर्जन, अब्राहमस डेंटल क्लिनिक

एवं ऑर्थोडॉन्टिक सेंटर, कोच्चि ने विभिन्न नींद संबंधी विकारों, उनके कारणों, लक्षणों और शीघ्र निदान एवं उपचार के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। डॉ डी शेषागिरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनपीओएल ने अभिनंदन संबोधन दिया और अच्छे स्वास्थ्य और उत्पादकता बनाए रखने के लिए अच्छी नींद के महत्व और लाभों पर प्रकाश डाला। एनपीओएल कार्य समिति की अध्यक्ष डॉ रेमा देवी एम ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और कार्य समिति के सचिव श्री टिटो चाको ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।



### एनएसटीएल को संयुक्त राज्य अमेरिका के पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया

संयुक्त राज्य अमेरिका के पेटेंट कार्यालय द्वारा "आर्टिकल हैंडलिंग सिस्टम" के लिए पेटेंट संख्या: यूएस 12, 534, 348 बी2 डॉ रामा कृष्णा वाराणसी, डॉ ओब्ला रामानन्दम नंदगोपन (सेवानिवृत्त) उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनएसटीएल, विशाखापत्तनम के आविष्कारक चौ० उप्पदा अर्बन कुमार, तथा रामाय्या, यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज, बैंगलोर के आविष्कारक श्री परिक्षित मल्ल्या और श्री चंद्रू पट्टरेय्या कुलकर्णी को प्रदान किया गया।

## डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में आगंतुक

### एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

जनवरी 2026 के दौरान, तीन टीमों ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु का दौरा किया। उनका उद्देश्य रक्षा अनुप्रयोगों के लिए माइक्रोवेव प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास, तकनीकी प्रगति और ईएमआई/ईएमसी से संबंधित मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। इन टीमों में मुख्य रूप से सेना वायु रक्षा इकाइयों के तकनीकी प्रशिक्षण प्रशिक्षक, छात्र अधिकारी और नवप्रशिक्षित अधिकारी शामिल थे।

मुख्यालय सेना वायु रक्षा महाविद्यालय (एएडीसी) के अधिकारियों के लिए 9 जनवरी 2026 को केंद्र में पहली औद्योगिक यात्रा का आयोजन किया गया। श्री नवीन कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' और उनकी टीम ने इस यात्रा का समन्वय किया।

13 जनवरी 2026 को आयोजित दूसरी औद्योगिक यात्रा में मुख्यालय सेना वायु रक्षा महाविद्यालय (एएडीसी) के 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसका समन्वय श्री अवधेश कुमार बरनवाल, वैज्ञानिक 'एफ' और उनकी टीम ने किया।

20-21 जनवरी 2026 के दौरान एएफटीसी, जालाहल्ली, बेंगलुरु के 51 वायु सेना कर्मियों के लिए तीसरी औद्योगिक यात्रा का आयोजन किया गया, और इसका समन्वय श्री अवधेश कुमार बरनवाल, वैज्ञानिक 'एफ' और उनकी टीम द्वारा किया गया।

### एनएमआरएल, अंबरनाथ

रियर एडमिरल विकास चावला, एसीओएम (डी एंड आर), एनएम, ने 7 फरवरी, 2026 को नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल), अंबरनाथ का दौरा किया। एनएमआरएल



की कार्यवाहक निदेशक डॉ डी रत्ना, वैज्ञानिक 'जी' ने उनका हार्दिक स्वागत किया। इस दौरे का उद्देश्य डीआरडीओ द्वारा विकसित वायु स्वतंत्र प्रणोदन (AIP) प्रणालियों पर विचार-विमर्श करना था।

यात्रा के दौरान, रियर एडमिरल विकास चावला को AIP कार्यक्रम से संबंधित गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई, जिसके बाद उन्होंने भूमि आधारित प्रोटोटाइप (LBP) सुविधा का

दौरा किया। रियर एडमिरल विकास चावला, एसीओएम (डी एंड आर), एनएम ने एनएमआरएल द्वारा विकसित AIP और विभिन्न प्रौद्योगिकियों की सराहना की। इस दौरे से भारतीय नौसेना के पनडुब्बी बेड़े में एआईपी के सफल समावेश के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी और रसद संबंधी पहलुओं पर रचनात्मक चर्चा हुई।

### एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति (SCoD) ने माननीय श्री राधा मोहन सिंह की अध्यक्षता में, 20 जनवरी 2026 को विशाखापत्तनम स्थित नौसेना विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल) का अध्ययन दौरा किया। डॉ. समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ; डीएस एवं डीजी (एनएस एंड एम) डॉ. आर वी हारा प्रसाद; उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं डीजी (आर एंड एम) डॉ. रविंदर सिंह; उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक (डीआरपीपीआई) श्री विपिन कुमार कौशिक; तथा उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक एनएसटीएल डॉ. अब्राहम वर्गीज ने अध्यक्ष और उनके प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया, जिसमें संसद के माननीय सदस्य, लोकसभा सचिवालय और रक्षा



मंत्रालय के अधिकारी शामिल थे।

प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय नौसेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंतर्जलीय प्लेटफार्मों, हथियारों, संबंधित उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के विकास में एनएसटीएल के अनुसंधान एवं विकास प्रयासों में गहरी रुचि दिखाई। समिति ने एनएसटीएल द्वारा विकसित टॉरपीडो, माइंस, डिकॉय, SMART, HEAUV, SWARM, अंतर्जलीय प्रणालियाँ, जलमग्न वाहन,

अन्य संबंधित जलमग्न हथियार प्रौद्योगिकियों का अवलोकन किया। समिति ने सी-कीपिंग एंड मैनुवरिंग बेसिन परीक्षण सुविधा में जहाज के एक छोटे मॉडल पर हाइड्रोडायनामिक परीक्षण का प्रत्यक्ष प्रदर्शन भी देखा।

SCoD के अध्यक्ष ने समुद्री क्षेत्र जागरूकता और जलमग्न क्षेत्र जागरूकता के रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में एनएसटीएल के अनुसंधान एवं विकास प्रयासों की सराहना की।

